IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढ़ राज्य की प्रमुख जनजाति

(ओरव के सन्दर्भ में)

[1]Name Dr. reena Tamrakar

[1]Designation Guest Asst. professor

[1]Name of Department Sociology

[1]Name of organization Govt.v.y..t. pg. autonomus college, durg Chhattisgarh india

Abstract: प्रस्तुत विवेचन में हम ओराव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, तथा सांस्कृतिक संरचना के आधार पर इन जनजातियों की प्रस्थिति को समझाने का प्रयास करेंगे.

ओराव जनजाति – छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में रहने वाली ओराव जनजाति एक महत्वपूर्ण ऑर जनसंख्या की दृष्टिं से तीसरी बडी जनजाति है. इसे ''धांगर '' अथवा ओराव नाम से जाना जाता है. स्थानीय भासा में "धांगर" शब्द का अर्थ खेत में काम करने वाले सेवक से होता है. ओराव जनजाति का जीवन बहुत कुछ अपने इसी नाम के अनुकूल है, इस जनजाति को कुरुख, कुदा तथा किसान नाम से भी जाना जाता है. छत्तीसगढ़ की सभी प्रमुख जनजातियों में ओराव ही एक ऐसी जनजाति है, जो द्रविण भाषा परिवार से संबधित भाषा बोलती है.

Index Terms - छत्तीसगढ, जनजाति,जीवन,सामाजिक,आर्थिक

प्रस्तावना-

भारत वर्ष में २०११ की जनगणना अनुसार क्रमशा मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा,राजस्थान, झारखण्ड, तथा छत्तीसगढ़ जनजातीय वाल्व सबसे प्रमुख ६ राज्य है, इन सभी ६ बड़े राज्यों में जनजातीय का सबसे अधिक प्रतिशत ३१.७६ छत्तीसगढ़ में है.

छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातीय समुदाय की प्रकृति को समझने से पहले छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलो में निवास करने वाले जनजातियों के बारे में जानना आवश्यक है

जिला	निवास करने वाली जनजातियो के नाम
बस्तर	गोंड
बिलासपुर	बैगा, अगरिया, भैना, धनवार, कोल, पाव, परधन, गोंड.
बीजापुर	परजा, गोंड.
दन्तेवाड़ा	भतरा, गदबा, परजा, गोंड.
धमतरी	हल्बा, कमार, पारधी, गोंड.
दुर्ग	गोंड.
जनजगीर चापा	गोंड.
जसपुर	कँवर, ओरव,कोरबा, खैरवार, भूमिया, नगेसिया, मांझी, अगारिया, मझवार, मुंडा, बिरहोर, गोंड.
कांकेर	गोंड.
कवर्धा	हल्बा, बैगा, परधान, गोंड.
कोरबा	सांवरा, कोरबा, मांझी, मझवार, पारधी, सनओता, गोंड.
कोरिया	ओराव,खैरवार, भूमिया, बैगा, अगारिया, बियार, गोंड.
महासमुंद	सावरा, बिंझवार, धनवार,खरिया, कमर, कोंध,गोंड,
नारायणपुर	भतरा , गदबा, गोंड.
रायगढ़	कँवर, ओराव,सावरा,कोरबा, बिंझवार भूमिया, मांझी,

	मंझवार, भैना,खरिया,कोंध,सओता,बिरहोर, गोंड.
रायपुर	बिंझवार, धनवार, खरिया, कमार,कोंध,भिजिया,गोंड.
राजनादगांव	हल्बा, गोंड.
सरगुजा	ओराव,कोरबा, खैरवार,भूमिया,नगेसिया,मांझी,अगारिया,मझवार,मुंडा, बियार, सओता,बिरहोर, गोंड.

सूचि के अनुसार छत्तीसगढ़ की गोंड जनजाति का विस्तार सभी जिलो में है, दूसरी ओर बस्तर, बिलासपुर, जसपुर, कोरबा, कोरिया, महासमुंद, रायगढ़, रायपुर,तथा सर्गुजसर्गुजा वे जिले है, जिनमे रहने वाले जनजाति जनसंख्या बहुत विविधतापूर्ण है. प्रस्तुत शोध पत्र में हमने छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजाति ओराव की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है.

अध्ययन का उददेश्य

१.छत्तीसगढ की प्रमुख जनजाति ओराव के बारे में जानना.

२. जनजाति के जीवन में हो रहे परिवर्तन को बतलाना.

शोध अभिकल्प-

विवरणात्मक एवं उपचारात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है

अध्ययन पद्धति-

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है.

प्रस्तुत विवेचन में हम ओराव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, तथा सांस्कृतिक संरचना के आधार पर इन जनजातियों की प्रस्थिति को समझाने का प्रयास करेंगे.

ओराव जनजाति – छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में रहने वाली ओराव जनजाति एक महत्वपूर्ण ऑर जनसंख्या की दृष्टिं से तीसरी बडी जनजाति है. इसे ‘‘धांगर ’’ अथवा ओराव नाम से जाना जाता है. स्थानीय भासा में “धांगर” शब्द का अर्थ खेत में काम करने वाले सेवक से होता है. ओराव जनजाति का जीवन बहुत कुछ अपने इसी नाम के अनुकूल है, इस जनजाति को कुरुख, कुदा तथा किसान नाम से भी जाना जाता है. छत्तीसगढ़ की सभी प्रमुख जनजातियों में ओराव ही एक ऐसी जनजाति है, जो द्रविण भाषा परिवार से संबधित भाषा बोलती है.

सामाजिक जीवन- इस जनजाति के सामाजिक जीवन को समझाने के लिए इसकी परिवार –संरचना, गोत्र व्यवस्था, विवाह-सम्बन्धी विशेषताओ तथा युवागृहों की प्रकृति को समझाना होगा.

परिवार संरचना- ओराव जनजाति के सदस्य पठारी और मैदानी क्षेत्रो के गावो में झोपड़ी बनाकर रहते है इन झोपदियो में रहने वाले ओराव परिवार साधारणतया एकांकी परिवार ही होते है, इनमे यद्यपि बहुपत्नी विवाह पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है लेकिन सामान्य निर्धनता के कारण अधिकांश पुरुष एक विवाह पर आधारित परिवारों की स्थापना करते है. आर्थिक रूप से कुछ थोडे से ओराव लोग ही बहुपत्नी विवाह आधारित परिवारों की स्थापना कर पाते है. इनके परिवारों की प्रकृति पित्रस्तामक तथा पित्रवंशिय है. इसका अभिप्राय है की परिवार का संपूर्ण नियंत्रण पिता के हाथो में होता है. ओराव जन्जारी में स्त्रियों को संपत्ति में कोई अधिकार नहीं होता है.लेकिन इसके बाद भी अनेक दूसरी जनजातियों की तुलना में ओराव स्त्रियों की स्थिति काफी अच्छी है. परिवार में स्त्रियों की सम्मानजनक स्थिति का एक प्रमुख कारण ओराव जनजाति में वधु मूल्य का प्रचलन होता है.

गोत्र व्यवस्था – ओराव जनजाति अनेक गोत्र समूहों में विभाजित है, इस जनजाति में यद्यपि अनेक गोत्र पाए जाते है, लेकिन इसमें लकरा- शेर, तिर्की-खेत का चूहा, भोखला-चिड़िया, कचछप- कछुआ, टीगा- बन्दर, काया- जंगली कुत्ता खागा- कौवा , गिद्दी-गिद्ध तथा खेस- धान वादी गोत्र प्रमुख है.

इस जनजाति में टोटाम की पूजा करने का प्रचलन है इस कारण एक विशेस गोत्र के लोग अपने टोटाम से सम्बंधित प्राणी को न तो कोई हनी पहुचाते है और नहीं उनका कोई तिरस्कार करते है. ओराव जनजाति में एक ही गोत्र के स्त्री पुरुष आपस में विवाह सम्बन्ध स्थापित नही करते.

विवाह- ओराव जनजाति में विवाह की आयु तुलनात्मक रूप से अधिक है , १९ वर्ष से कम आयु के लड़के तथा १६ वर्ष से कम आयु की लड़की का विवाह करना उचित नहीं समझा जाता. इस जनजाति में विधवा अथवा परित्यागता स्त्री के विवाह पर किसी तरह का प्रतिबन्ध नहीं है. यद्यपि इस दशा में कन्या मूल्य की राशि कम अवश्य हो जाती है. इस जनजाति में विवाह की पहली रसम “पान बंधी ’’ अर्थात सगाई होती है, इसके दो वर्ष के बाद ही विवाह किया जा सकता है. विवाह भोज में चांवल की शराब को बाटना अनिवार्य समझा जाता है.ओराव जनजाति में विवाह विच्छेद पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है.

युवा गृह- ओराव जनजाति में एक परम्परा के रूप में युवाग्रिहो का विशेष महत्व रहा है, यह युवा गृहों लड़के तथा लड़कियों के लिए अलग अलग होते है. यहाँ लडको के युवा गृहों में लडको को धुमकरिया कहा जाता है , जिनमे लडको को ६-७ वर्ष की आयु में ही भेज दिया जाता है इन युवागृहों में लडको को तिन भागो में बाटा जाता है १-प्योना जोखर – नया बच्चा २-मांझ तुरीया जोखर अर्थात माध्यम आयु के बच्चे तथा ३-कोहा जोखर अर्थात पुराने सदस्य . लड़कियों के लिए बनाये गए युवागृहों को "पेल झरपा " कहा जाता है, इनमे भी आयु के आधार पर लड़कियों को अनेक वर्गों में विभाजित करके रखा जाता है. प्रत्येक धुमकरिया में किसी युवा सदस्य को मुखिया बनाया जाता है, जिसे महतो कहा जाता है, महतो ही धुमकरिया के सदस्यों को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण देता हैहै, इसके बाद भी युवागृहों के संचालन पर गांव के किसी वृद्ध व्यक्ति का नियंत्रण होता है.

आर्थिक जीवन –ओराव जनजाति की अर्थव्यवस्था एक सरल और मिश्रित अर्थव्यवस्था है. इस जनजाति में कृषि प्रमुख व्यवसाय होने के बाद भी जहा एक ओर ओराव शिकार, खाद्य संग्रह तथा पशुपालन पर भी निर्भर रहते है, वही ओद्योगिक नगरों तथा अनेक आसपास रहने वाले ओराव ओद्योगिक श्रमिकों के रूप में भी आजीविका के साधन प्राप्त करने लगे है. इस व्जन्जती में परम्पराओ का विशेष महत्व है, एक परंपरा के रूप में यहाँ आज भी शिकार का काम किया जाता है , यद्यपि इसका रूप केवल प्रतीकात्मक रूप रह गया है. बहुत प्राचीन काल से ही ओराव जनजाति खाद्य संग्रह जनजाति रही है. शिकार ओराव जनजाति के अर्थव्यवस्था का आधार नहीं है , बल्कि यह उनकी परंपरा को बनाये रखने वाला एक प्रतिक मात्र है.

राजनितिक जीवन- ओराव जनजाति में एक सुदृढ राजनितिक संगठन देखने को मिलता है पहले इस जनजाति में अनुवांशिक मुखिया संगठन देखने को मिलता है लेकिन अब यह लगभग समाप्त हो चुकी है, अब प्रत्येक गांव के सदस्य अपने लिए एक मुखिया का चुनाव करते है, जिसे पनुआ कहा जाता है , कुछ स्थानों में गांव के मुखिया को महतो भी कहा जाता है. मुखिया उसी व्यक्ति को कहा जाता है, जो आयु में अधिक और विवाहित हो. इस जनजाति में गांव पंचायत की संरचना को निम्न संस्तरण की सहायता से समझा जा सकता है-

राजमोरल- गांव का मुखिया

↓

मंत्री – प्रशासनिक कार्य करने के लिए राजमोरल द्वारा नियुक्त सचिव

↓

पनुवा – गोत्र के मुखिया

↓

चौकीदार – संदेहवाहक .

धार्मिक जीवन – ओराव जनजाति के धार्मिक जनजाति के धार्मिक जीवन में उनके परंपरागत धार्मिक विश्वासों तथा धार्मिक आन्दोलनो से उत्पन्न नए विश्वासों का मिला जुला रूप देखने को मिलता है. इस जनजाति के धार्मिक जीवन के त्योहारों का विशेष महत्व है. ऐसे त्योहारों में जाता कर्म तथा मई दिवस, सरहुल, त्यौहार तथा कनिहारी आदि का महत्वपूर्ण स्थान है, इस जनजाति के लोग त्योहारों को धार्मिक विश्वासों से सम्बन्ध मानते हुए उन्हें बहुत उत्साह से मानते है .

ओराव लोग धर्मेश देवता को सफ़ेद मुर्गी की बलि चढाते है, उन्द्क फोश्वास है की वे किसी भी कार्य के लिए इश्वर को उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं है. इश्वर की दृष्टि से सभी समान है , और प्रत्येक व्यक्ति को आयु के बाद मेरखा – स्वर्ग की प्राप्ति अवश्य होती है.

ओराव जनजाति में भुत प्रेत से सम्बंधित विश्वास भी तक बने हुए है, वर्षा लेन के लिए यहाँ लोग सरना देवी की पूजा उपासना करते है. ओराव लोगो का मानना है की जो लोग दुर्घटनाओं में मर जाते है , उनकी आत्माए सदेव भटकती रहती है , ऐसी आत्माओ को ये लोग भुला कहते है , इसके अतिरिक्त ओराव जनजाति में जादुई क्रियाओ से सम्बंधित विश्वास भी देखने को मिलता है.

निष्कर्ष- ओराव जनजाति के अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुइ है की ये जनजाति आज वर्त्तमान परिपेक्ष्य में अपनी मूल संस्कृति को ना भूलते हुए वर्तमान में परिवर्तन को भी अपना रही है , जो उनकी सामाजिक सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिवेश में सुधर लाकर अन्य लोगो के साथ सामंजस्य स्थापित कर रहे है. और अपने जीवन स्तर में सुधर लेन का प्रयासरत है.

संन्दर्भ सूची-

1.अग्रवाल जी.पी.[१९६०], जनजातीय समाज का समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन पी.पी-१७४-१७९.

2. cencus report 2011

3.www.google.com